यों असल खेल की है नहीं, ए तो दिल में देखाई देत।
किया हुकमें महंमद रूहों देखने, तो भिस्त में इनों को लेत।। २६ ।।

इस तरह से खेल की कुछ असलियत नहीं है। यह तो मात्र दिल का भ्रम है, जो श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों को दिखाने के लिए बनाया है। इनके कारण से ही इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर देंगे।

हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन।
जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अर्स तन।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों के वास्ते ही यह विवरण किया है। श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि मिलकर हम सब विचार करें तो परमधाम के सब आराम और साहेबी के सुख यहीं पर मिल सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १९६६ ॥

मता हक–ताला ने मोमिनों को दिया

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तुमको इतने बड़े परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है। यदि तुम्हें फिर भी इस वाणी की समझ न आए तो जागृत बुद्धि से सब मिल-बैठकर विचार करना।

ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार।
भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नींद विकार।। २ ।।

यह बड़ी हैरानी वाली बात देखी कि परमधाम के बेशुमार सुख पाकर और जागृत बुद्धि के ज्ञान से निःसंदेह होने पर भी माया की चाहना नहीं छूटती।

ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की।
तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है और हुकम के वास्ते (मोमिन के वास्ते) ही कहा गया है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! दुनियां को पीठ देकर पाक-साफ होकर श्री राजजी के इश्क के प्याले पी।

खुदी हक हुकम की, सो तो भूलें नाहीं कब।
वह काम सोई करसी, जो भावे अपने रब।। ४ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज के हुकम का ही अहं है जो कभी नहीं भूलेगा, इसलिए हुकम तो वही काम करेगा, जो श्री राजजी महाराज को पसन्द होगा।

हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन।
खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन।। ५ ।।

हुकम श्री राजजी का है और अहंभाव भी हुकम का है, इसलिए अहंभाव और हुकम दोनों श्री राजजी के हैं। यहां रूहों को क्या लेना-देना, सब कुछ कराने वाला हक का हुकम है।

Nijanand App

हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों मैं।
या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों सें।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज अपने पाक-साफ मोमिनों को कहते हैं कि मैं तुमसे दोस्ती रखता हूं। तुम्हारा दोस्त हूं। अब अहंभाव हो या मेरा हुकम यह दोनों तुम्हारे विरुद्ध कोई काम नहीं करेंगे।

हुकमें लिया भेख रूह का, सो भी हांसी खुसाली रूहन।
क्यों सिर लेना खुदी हुकम, पाक होए पकड़े चरन।। ७ ।।

हुकम ने रूहों का भेष बनाया है। वह भी रूहों की हंसी और खुशी के वास्ते, इसलिए श्री राजजी महाराज के हुकम के अहं को मोमिन अपने सिर पर क्यों लेंगे? वह संसार से पाक-साफ होकर श्री राजजी के चरण पकड़ेंगे।

जब भेख काछा रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन।
नाम धराए क्यों रद करे, हक एती देत बड़ाई जिन।। ८ ।।

जब रूहों का भेष हुकम ने धारण किया है, तो रूहों की रहनी में हुकम को रहना चाहिए। श्री राजजी महाराज ने रूहों को इतनी बुजरकी (बड़ाई) दी है। हुकम उनके नाम पर क्यों धब्बा लगाकर रूहों की महानता को समाप्त करता है?

ए निस दिन बातें विचार हीं, सोई हुकम हुज्जत मोमिन।
पाक हुआ सो जो अर्स दिल, जाके हक कदम तले तन।। ९ ।।

रात-दिन यही बातें विचार में आती हैं। जो मोमिनों का नाम है, वह श्री राजजी का हुकम ही है। जो संसार की चाहना से पाक-साफ हो गए हैं, उन्हीं के दिल में श्री राजजी महाराज अपना अर्श कर बैठे हैं। इन्हीं के मूल तन परआतम परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावा में बैठे हैं।

हुकम तो तन में सही, और लिए रूह की हुज्जत।
हिस्सा चाहिए तिन का, सो भी माहें बोलत।। १० ।।

मोमिनों के नाम से हुकम संसार के तनों में है। अब इसमें जितना हिस्सा मोमिनों का होना चाहिए, वही मोमिन के अन्दर से बोलते हैं।

कह्या दिल अर्स मोमिन का, दिल कह्या न हुकम का।
देखो इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका।। ११ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, हुकम के दिल को नहीं। इसका विवरण कर देखो, क्योंकि मोमिन का घर अखण्ड परमधाम है (हुकम परमधाम में नहीं है)।

मोमिन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख।
दिल अर्स हक इलम, रूह की हुज्जत नाम भेख।। १२ ।।

मोमिनों के तन में श्री राजजी महाराज का हुकम है। उस तन में रूहों की चाहना के हिस्से को देखो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से, मोमिनों का दिल अर्श है, यह पहचान हो गई है। यह हुकम रूह का झूठा भेष धारण किए है।

Nijanand App

जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर।
सो अर्स बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर।। १३ ।।

मान लिया जाए कि रूहें यहां नहीं हैं और यहां श्री राजजी का ज्ञान लेकर उनका हुकम ही है, तो अखण्ड परमधाम और श्री राजजी के बिना हुकम भी रूहों के नाम से संसार में कैसे रह सकता है?

एता मता रूह का, हुकम के दरम्यान।
तिन का जोरा चाहिए, जो हक आगूं होसी बयान।। १४ ।।

रूहों की इतनी बड़ी न्यामत हुकम के अन्दर है, तो फिर रूहों की शक्ति ज्यादा होनी चाहिए, जिसकी श्री राजजी महाराज के सामने चर्चा होगी।

हांसी न होसी हुकम पर, है हांसी रूहों पर।
जाको गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर।। १५ ।।

परमधाम की हंसी रूहों पर होनी है, हुकम पर नहीं। मूल-मिलावा में गुनाह रूहों पर लगा है, ऐसा कुरान कहता है।

मोमिन बैठे खेल में, अजूं बीच ख्वाब।
गुनाह पेहेले पोहोंच्या अर्स में, करें मासूक रूहें हिसाब।। १६ ।।

मोमिन अब तक भी सपने के संसार में बैठकर खेल देख रहे हैं। इनका गुनाह इनसे पहले परमधाम पहुंच जाता है। श्री राजजी महाराज अपनी रूहों के गुनाहों का लेखा-जोखा (एकाउण्ट) परमधाम में कर रहे हैं।

हक हुकम तो है सब में, बिना हुकम कोई नाहें।
पर यामें हुकम नजर लिए, और रूह का बड़ा मता या माहें।। १७ ।।

श्री राजजी का हुकम तो सब पर है। बिना हुकम तो कोई नहीं है, पर जो संसार में रूह की इतनी बड़ी साहेबी है, यह हुकम रूहों पर भी नजर रखे हुए है।

जेता हिस्सा तन में जिनका, सो जोरा तेता किया चाहे।
ए विचार करें सो मोमिन, हक हुकम देसी गुहाए।। १८ ।।

अब इस संसार के तन में जितना हिस्सा रूहों का है और जितना हिस्सा हुकम का, उनको उसी अनुसार ताकत लगानी चाहिए। इस बात को जो विचारे, वही मोमिन है। उसकी गवाही श्री राजजी का हुकम देगा।

ताथें हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमिन।
अर्स दिल खुदी से क्यों डरें, लिए हक इलम रोसन।। १९ ।।

इसलिए हुकम के सिर दोष देकर मोमिन चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की वाणी के ज्ञान से वह मोमिन, जिनके दिल में श्री राजजी विराजमान हैं, अहंभाव (स्वाभिमान) से नहीं डरेंगे।

गुनाह नूरतजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित।
कह्या गुनाह कुलफ मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत।। २० ।।

परमधाम के बीच मूल-मिलावा में रूहों को गुनाह लगा। ऐसा नूरनामा में श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद को बताया। उनसे कहा कि यह मोमिन जो मोती हैं, यह गुनाह के कारण ही नहीं बोल रहे हैं। तेरी हकी सूरत तारतम ज्ञान की कुंजी से इनके गुनाह साफकर परमधाम में जागृत करेगी।

Nijanand App

हिसाब जिनों हाथ हक के, अर्स-अजीम के माहें।
अर्स तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नाहें।। २१ ।।

मोमिनों का हिसाब परमधाम में श्री राजजी के हाथ है। जिनके तन मूल-मिलावा में हैं, उनको कहीं पर किसी तरह का जरा भी डर नहीं है।

करी हांसी हकें रूहों पर, जिन वास्ते किया खेल।
रूहों बहस किया इस्क का, बेर तीन देखाया माहें लैल।। २२ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज ने रूहों के ऊपर हंसने के वास्ते ही खेल बनाया है और तीन बार बृज, रास और जागनी के खेल दिखाए हैं, क्योंकि रूहों ने परमधाम में इश्क का वार्तालाप किया था।

हक आगूं कहे महंमद, मोहे अर्स में बिना उमत।
हकें दिया प्याला मेहेर का, कहे मोहे मीठा न लगे सरबत।। २३ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के आगे रसूल साहब ने कहा, हजूर! मुझे अपने भाइयों के बिना श्री राजजी के इश्क का दिया हुआ प्याला भी अभी मीठा नहीं लगता।

हकें दोस्त कहे औलिए, भए ऐसे बुजरक।
इनों को देखे से सवाब, जैसे याद किए होए हक।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मोमिनों को ही खुदाई इलम का ज्ञानी दोस्त कहा है। इनको ऐसी बुजरकी दी है कि दुनियां वालों को जो नफा खुदा के याद करने से मिलता है, वह नफा मोमिनों के दर्शन मात्र से ही मिल जाता है।

जित पर जले जबराईल, पोहोंच्या न बिलंदी नूर।
बिना रूहें इसारतें खिलवत, दूजा ए कौन जाने मजकूर।। २५ ।।

जिस परमधाम के अन्दर जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका और कहता है कि मेरे पर (पंख) जलते हैं, उस मूल-मिलावा की रूहों की बातें, रूहों के बिना और कौन जान सकता है?

अलस्तो बे रब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन।। २६ ।।

जब रूहों से श्री राजजी ने कहा कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा (खावंद) हूं, तब रूहों ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया कि हां, आप ही हमारे खुदा हैं। इस बात की जानकारी मोमिनों के अतिरिक्त और कौन दे सकता है? क्योंकि उनके अतिरिक्त और कोई दूसरा था नहीं। ऐसा कुरान में लिखा है।

तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।। २७ ।।

रूहों से श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मृत्युलोक में जा रहे हो। वहां जाकर मुझे भूल जाओगे। मैं तुम्हारे पास अपने रसूल को भेजूंगा। तब तुम ईमान ले आना।

तुम माहों माहें रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको।। २८ ।।

तुम आपस में गवाह रहना। मैं भी गवाह रहूंगा। इन बातों को तुम भूलना नहीं। मैं तुम्हारे पास कुरान भेजूंगा।

Nijanand App

और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी।। २९ ।।

और असराफील फरिश्ता गवाही देगा। रसूल साहब तुम्हें इन बातों को जो मेरे आगे हुई हैं, याद दिलाएंगे।

ऐसी बड़ाई औलियों, हक अपने मुख दें।
कोई याको न जाने मुझ बिना, मैं छिपाए तले कबाए के।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज अपने ही मुख से मोमिनों की महिमा ऐसी बता रहे हैं। हे रूहो! मैंने आज दिन तक तुम्हें दामन के नीचे छिपा रखा है, जिसको मेरे बिना और कोई नहीं जानता है।

मांगी हुकमें रूह की हुज्जतें, दीजे दुनी में लाड़ लज्जत।
सो हक आप मंगावत, कर हांसी जुदाई बीच वाहेदत।। ३१ ।।

अब हुकम ने तुम्हारे नाम से दुनियां में लाड़-लज्जत मांगी, इसलिए श्री राजजी महाराज आप खुद ही मंगवाने वाले हैं और स्वयं ही हंसी के वास्ते जुदाई देने वाले हैं।

कबूं न जुदागी बीच वाहेदत, ए इलमें किए बेसक।
तेहेकीक बैठे तले कदमों, न जुदे रूहें हादी हक।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान ने यह संशय मिटा दिए कि परमधाम में कभी जुदाई होती ही नहीं। हम निश्चित रूप से आपके चरणों तले मूल-मिलावा में बैठे हैं। इस तरह से श्री राजश्यामाजी और रूहें अलग नहीं हैं।

हुआ रब्द वास्ते इस्क, सबों बड़ा कह्या अपना।
हकें हांसी करी हादी रूहोंसों, कहे देखो खेल फना।। ३३ ।।

इश्क के वास्ते ही मूल-मिलावा में रब्द (वार्तालाप) हुआ। जहां श्री राजश्यामाजी और रूहों, सभी ने अपने इश्क को बड़ा बताया। अब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और रूहों से हंसी के वास्ते झूठे संसार का खेल देखाया।

खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन।
सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन।। ३४ ।।

इसलिए श्री श्यामाजी और रूहों को खेल का जोश चढ़ गया और इश्क किसी के पास नहीं रहा। अब सभी खेल में साहेबी चाहते हैं, इसलिए उनके पास श्री राजजी का इश्क नहीं आता।

था रब्द सबों इस्क का, हक देत फेर फेर याद।
रूहें क्योंए न छोड़ें खेल को, दुख लाग्या ऐसा कोई स्वाद।। ३५ ।।

मूल-मिलावा में सभी ने इश्क का वार्तालाप किया, जिसकी बार-बार श्री राजजी याद दिलाते हैं। संसार के दुःख का स्वाद ऐसा मीठा लग रहा है कि जिससे रूहें खेल को छोड़ना नहीं चाहतीं।

जब देखिए सामी खेल के, तो बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
एती जुदाई हक अर्स के, और खेल वजूद जो पिंड।। ३६ ।।

जब खेल की तरफ देखें तो आतम और परआतम के बीच ब्रह्माण्ड खड़ा है। श्री राजजी महाराज और परमधाम की जुदाई में यह संसार का तन ही बाधक बनकर खड़ा है।

Nijanand App

हक इलमें ए पिंड देखिए, ए पिंड बीच अर्स तन।
एक जरा जुदागी ना रही, अर्स वाहेदत बीच वतन।। ३७ ।।

जब जागृत बुद्धि के ज्ञान से माया के शरीर की तरफ देखते हैं, तो इस शरीर से परमधाम के मूल तन दिखाई देते हैं, इसलिए परमधाम में श्री राजजी से एक जर्रा मात्र की जुदाई नहीं है।

जाहेर नजरों खेल देखिए, कहूं नजीक न अर्स हक।
तरफ भी न पाई किनहूं, बीच इन चौदे तबक।। ३८ ।।

अब जाहिरी नजर से खेल को देखें तो परमधाम और श्री राजजी महाराज खेल में कहीं दिखाई ही नहीं देते। चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड में यह जानकारी ही नहीं है कि श्री राजजी महाराज हैं कहां?

जबथें पैदा भई दुनियां, रही दूर दूर थें दूर।
फना बका को न पोहोंचहीं, ताथें कोई न हुआ हजूर।। ३९ ।।

जब से यह दुनियां पैदा हुई है, वह अखण्ड परमधाम से सदा दूर ही दूर रही है। नाशवान संसार का कोई भी अखण्ड को नहीं पहुंच सकता, इसलिए आज दिन तक कोई भी श्री राजजी महाराज के सामने नहीं जा सका।

दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्स से, रूहें और फरिस्ते।
हकें इलम भेज्या इनों पर सो ले दोऊ अर्सों पोहोंचे ए।। ४० ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें परमधाम और अक्षरधाम से खेल में उतरी हैं। श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान इन्हीं के वास्ते भेजा है, जिसके द्वारा दोनों अपने-अपने घर पहुंचेंगी।

आए फरिस्ते नूर मकान से, अर्स अजीम मकान रूहन।
कलाम अल्ला हक इलम, ए आए ऊपर रूह मोमिन।। ४१ ।।

ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम से आई है ब्रह्मसृष्टि परमधाम से। कुरान तथा जागृत बुद्धि का ज्ञान रूहों (मोमिनों) के वास्ते आया है।

दोऊ गिरो जो उतरी, दोऊ अर्सों से आईं सोए।
सो आप अपने अर्स में, बिना लदुन्नी न पोहोंचे कोए।। ४२ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम और अक्षरधाम से खेल में आई हैं, इसलिए वह वापस अपने घर में बिना जागृत बुद्धि के ज्ञान के नहीं पहुंच सकतीं।

आप अपने अर्स में, जाए ना सके बिना इलम।
तो फुरमान इलम भेजिया, रूहें दरगाही जान खसम।। ४३ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने घर नहीं पहुंच सकतीं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपनी परमधाम की अंगनाओं के वास्ते कुरान और जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजा।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो पकड़या इलम हक।
हक सूरत सुध अर्सों की, रूहों रही न जरा सक।। ४४ ।।

मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण किया, इसलिए इनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। अब रूहों के संशय मिट गए हैं। उन्हें क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की तथा श्री राजजी के स्वरूप की पहचान हो गई है।

Nijanand App

सोई मोमिन जाको सक नहीं, और दिल अर्स हक हुकम।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदम।।४५।।

मोमिन वही हैं, जिनके संशय मिट गए हैं और जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं। हुकम ने अक्षर के पार अक्षरातीत, परमधाम की पहचान करा दी है, जिससे रूहों के दिल में श्री राजजी के चरण आ गए।

पेहेले पट दे खेल देखाइया, दई फरामोसी हांसी को।
दिया बेसक इलम अपना, तो भीं न आवें होस मों।।४६।।

पहले फरामोशी का परदा देकर खेल दिखाया, ताकि रूहों के ऊपर हंसी हो सके। अब अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दे रहे हैं। फिर भी रूहें होश में नहीं आती हैं।

इलमें अंदर जगाइया, तिन में जरा न सक।
कहे हुई है होसी असों की, रूहें बैठी कदम तले हक।।४७।।

जागृत बुद्धि ने उनकी आत्म-दृष्टि खोल दी है। इसमें जरा भी संशय नहीं है। जो बातें कही थीं वह हुई हैं। सब अर्शों (बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम) की पहचान हो गई है। उनको यह भी पहचान हो गई है कि हमारी परआतम श्री राजजी के चरणों तले बैठी है।

इन बातों सक जरा नहीं, तो दिल अर्स कह्या मोमिन।
तो भी टले ना बेहोसी, वास्ते हांसी बीच वतन।।४८।।

इन बातों में जरा भी संशय नहीं रह गया, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। फिर भी मोमिनों की बेहोशी नहीं हटती, क्योंकि परमधाम में हंसी होनी है।

विरहा सुनत रूहें अर्स की, तबहीं जात उड़ तन।
सो गवाए याद कर कर हकें, जो बीतक अर्स वचन।।४९।।

श्री राजजी महाराज के वियोग की बातें सुनकर रूहों के तन छूट जाते, परन्तु श्री राजजी महाराज ने परमधाम की बीती बातों को बार-बार याद कराकर विरह का दुःख समाप्त कर दिया।

मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के वचनों गाए।
सो अव्वल से ले अबलों, विरहा गाया लडाए लडाए।।५०।।

मैंने सोचा था कि विरह के वचनों को बार-बार यादकर इश्क आ जाएगा, इसलिए शुरू से आज तक श्री राजजी महाराज के विरह के गीत बड़े प्रेम से गाए।

सो गाए विरहा न आइया, प्रेम पड़्या बीच चतुराए।
हांसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए।।५१।।

श्री राजजी महाराज के विरह को बार-बार याद किया, इसलिए प्रेम चतुराई में पड़ गया। हुकम से संसार में हमारी हंसी कराई कि हमें श्री राजजी महाराज के वचनों से प्यार लग गया।

सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए।
मन चित्त बुध अहंकारें, गुझ अर्स कह्या बनाए।।५२।।

अब विरह के गीत गाते-गाते हमारा दिल कठोर हो गया है। धनी का इश्क भूल गया। अब मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार से परमधाम की छिपी बातें बना-बनाकर कहती हूं।

Nijanand App

अर्स मता जेता हुता, किया जाहेर नजर में लें।
हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के।।५३ ।।

हमने परमधाम की छिपी बातों को ध्यान में ले-लेकर खूब जाहिर किया, परन्तु जिस इश्क के वास्ते यह सब कुछ किया, वह इश्क हमें इस सपने के संसार में नहीं मिला।

चौदे तबक बेसक हुए, इन बानी के रोसन।
सो इलम ले कायम हुए, सुख भिस्त पाई सबन।।५४ ।।

हमारे द्वारा जागृत बुद्धि का ज्ञान जाहिर होने से चौदह तबकों के संशय मिट गए। वह ज्ञान को लेकर अखण्ड हो गए। सबको बहिश्त के सुख मिले।

हक खिलवत गाए सें, जान्या हम को देसी जगाए।
इस्क पूरा आवसी, पर हकें हांसी करी उलटाए।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की हकीकत को मैंने जाहिर किया। मैंने जाना था कि हम इससे जागृत हो जाएंगे और पूरा इश्क आ जाएगा, परन्तु श्री राजजी महाराज ने हमारी भावनाओं को उलट दिया और हमारे ऊपर हंसी की है।

जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए।
दिल अर्स पोहोंचे रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज हमको इश्क दे देते, तो हम कैसे विरह के गीत गाते? हमारी रूह इश्क के द्वारा तुरन्त ही परआतम में पहुंच जाती और फिर रूहें कैसे रहतीं?

सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हांसी सोए।।५७ ।।

हम संसार में आकर रो-रोकर धनी से इश्क मांगते हैं, पर हमारे सब अंग तो धनी के हाथ में हैं, जो उन्होंने बांध रखे हैं, इसलिए हमारे द्वारा इश्क मांगने पर हंसते हैं, हम पर हांसी करते हैं।

हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानें त्यों करे खसम।।५८ ।।

हम यहां खेल में श्री राजजी के हुकम के हाथ में हैं और हुकम श्री राजजी के हाथ में है, इसलिए संसार में हमारा क्या चल सकता है? जैसा श्री राजजी चाहें, वैसा करें।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें भुलाए हांसी कों।
हम दौड़े जान्या लें इस्क, हम को डारे बका इलम मों।।५९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते हमें भुला दिया है। हमने सोचा था हमारे परिश्रम से हमें इश्क मिल जाएगा, परन्तु श्री राजजी महाराज ने हमें परमधाम के अखण्ड ज्ञान में उलझा दिया।

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ २०२५ ॥

Nijanand App